Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

The Educational Philosophy of Maharishi Ved Vyasa

महर्षि वेद व्यास का शिक्षा दर्शन

Dr. Asha Sharma

प्राचार्या, श्रीमती हेलेना कौशिक महिला महाविद्यालय, मलसीसर, झुन्झुनूं, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *Dr. Asha Sharma

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15881321

ABSTRACT

The educational philosophy of **Maharishi Ved Vyasa** is exceptionally comprehensive, profound, and rooted in fundamental values of life. He did not regard knowledge merely as a subject confined to books and classrooms; rather, he conceived it as an art of living and a pathway towards the attainment of *Moksha* (liberation). The central objective of his philosophy was the welfare and well-being of all humanity, reflected in the ideal of **"Sarve Bhavantu Sukhinah"**, meaning "May all beings be happy." In this sense, the educational philosophy of Maharishi Ved Vyasa occupies a significant position among the great philosophical and educational traditions of the world.

The researcher concludes that the educational philosophy of Ved Vyasa is not confined to ancient India but can also serve as a valuable guide for contemporary educationists, teachers, students, and policymakers. His educational ideas have considerable relevance for enriching the present education system ethically, spiritually, and socially. His emphasis on knowledge, moral values, holistic development, self-realization, and the welfare of society provide a meaningful framework for addressing several contemporary educational challenges.

Maharishi Ved Vyasa was one of the great sages of Indian culture who made significant contributions to the fields of **education, literature, philosophy, and religion**. His educational thought emphasizes the harmonious development of the individual and the cultivation of knowledge, values, character, and social responsibility. Therefore, his philosophy continues to offer valuable insights for developing a holistic and value-oriented system of education in the contemporary world.

KEYWORDS: Maharishi Ved Vyasa, Educational Philosophy, Indian Culture, Indian Education, Moral Values, Holistic Development, Self-Realization, Social Welfare, Value-Based Education.

वेदव्यास जी का शैक्षिक दर्शन अत्यन्त व्यापक, गहन और जीवनमूल्य आधारित है। उन्होने ज्ञान को केवल पुस्तकीय विषय न मानकर, जीवन जीने की कला और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया। उनके दर्शन का उद्देश्य था- ''सर्वे भवन्तु सुखिन'' अर्थात समस्त मानव समाज का कल्याण। निश्चित ही महर्षि वेदव्यास का दर्शन विश्व के महान दार्शनिकों एवं शिक्षा दर्शन में सर्वोपरि है।

शोधकत्र्री ने अपने शोध के निष्कर्ष रुप में पाया कि वेदव्यास जी का शैक्षिक दर्शन केवल प्राचीन भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आज के शिक्षाविदों, शिक्षकों, छात्रों और नीति-निर्माताओं के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है। उनकी शिक्षाऐं वर्तमान शिक्षा प्रणाली को नैतिक, आत्मिक और सामजिक रुप से समृद्ध बनाने मे मददगार हो रही है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:** 25-04-2024
- ✓ **Accepted:** 25-05-2024
- ✓ **Published:** 30-05-2024
- ✓ **MRR:2(5):**2024;46-48
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

Sharma A. महर्षि वेद व्यास का शिक्षा दर्शन. Indian Journal of Modern Research and Reviews: 2024; 2(5):46-48.

© 2024 Dr. Asha Sharma. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

शिक्षा दर्शनः शिक्षा के सिद्वान्तोंए उद्देश्यों और प्रथाओं के बारे में दार्शनिक दृष्टिकोण है। यह शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर दार्शनिक दृष्टिकोण को समझने और लागू करने से संबधित है।

महाभारत के रचियता वेदव्यासजी ने अपनी अतुल्य बुद्धिमता से शिक्षा दर्शन के विचारों को प्रकट किया। उन्होने मनुष्य जीवन से जुड़े ऐसे विचार रखे की यदि व्यक्ति अपने जीवन में उन पर अमल करे तो उसे हर रास्ते पर सफलता मिलती है।

व्यासाय विष्णुरुपाय व्यासरुपाय विष्णवे।
नमों वै ब्रहानिधय वासिष्ठाय नमों नमः।।''

अर्थातः व्यास विष्णु के रुप हैए तथा विष्णु ही व्यास है। ऐसे वसिष्ठ मुनि के वंशज को मैं नमन करती हूँ।

जीवन परिचयः महाभारत ग्रंथ के रचयिता महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास महर्षि पाराशर और सत्यवति के पुत्र, पौराणिक महाकाव्य युग की महान विभूति महाभारत, 18 पुराण, श्रीमद्भागवत गीता, ब्रहासूत्र, मीमांसा जैसे अद्वितीय साहित्य दर्शन के प्रणेता वेदव्यास का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा को लगभग 3 हजार ईसा. पूर्व यमुना तट पर हस्तिनापुर में हुआ था। महर्षि बाल्यकाल से ही बुद्धिमता के धनी रहे, वे हर विषय को समझने में ज्यादा समय नहीं लेते थे। वेदव्यासजी की पुराणों के ज्ञान के प्रति इतनी बाहुल्यता थी की महज सोलह वर्ष की उम्र में ही उन्होने आश्रम में होने वाले धार्मिक कार्यों में हिस्सा लेना शुरु कर दिया था। उस समय उनके ज्ञान के आगे कोई नहीं टिक पाता था। भारत के प्राचीन गं्रथों के अनुसार महर्षि वेदव्यास स्वयं भगवान विष्णु के एक रुप थे। महर्षि वेदव्यास को सात चिरंजीवी मे से एक माना जाता है। हिन्दू परम्परा के अनुसार वे अभी भी जीवित है। ऐसा कहा जाता है कि महर्षि वेदव्यास आधुनिक उत्तराखण्ड में गंगा के तट पर रहते थे। यह स्थल महाभारत के पांच पाण्डवों के साथ ऋषि वसिष्ठ का भी अनुष्ठान स्थल था। महर्षि वेदव्यास के सम्मान मे गुरु पुर्णिमा का त्यौहार समर्पित है। इसलिए गुरु पुर्णिमा को व्यास पुर्णिमा भी कहा जाता है।

महर्षि शुकदेव के पिता तथा ऋषि जाबाली की बेटी पिंजल के पति महर्षि वेदव्यास के तीन सौतेले भाई भीष्म, चित्रागंद और विचित्रवीर्य थे। प्राचीन गं्रथों के अनुसार महर्षि वेदव्यास स्वंय ईश्वर के स्वरुप थे, क्योकि महर्षि जन्म से ही वेद वेदांगों में पारंगत थे। जन्म होते ही महर्षि वेदव्यास बड़े हो गये और तपस्या करने हेतु द्वैपायन द्वीप चले गये। द्वैपायन द्वीप में तपस्या करने से उनका शरीर का रंग काला पड़ गया इस कारण उन्हें कृष्ण द्वैपायन कहा जाने लगा। महर्षि वेदव्यास कोे अन्य नाम कृष्ण द्वैपायन, बादरायणि, पाराशर्म जाना जाता है। उन्होने वैदिक ़ऋषि के रुप अपना जिविकोपार्जन किया। आगे चलकर वेदों का विभाजन करने के कारण वे वेदव्यास के रुप में विख्यात हुए। महर्षि वेदव्यास के विद्वान शिष्यों में- पैल, जैमिन, वैशमपायन, सुमन्तुमुनि, शेम, हर्षण प्रमुख हुए। महर्षि वेदव्यास के बारे में कहा जाता है कि 'वेदव्यास' नाम वास्तविक नाम की बजाय एक शीर्षक है, क्योकि कृष्ण द्वैपायन ने चारों वेदों को संकलित किया था।

महर्षि वेदव्यास का सम्बन्ध महाभारत के पात्रों के साथ बहुत घनिष्ठ का है। महर्षि धृतराष्ट्र, पाण्डू तथा विदूर के जन्मदाता ही नहीं थे, अपितु पाण्डवों का विपत्ति के समय छाया के समान अनुगमन करने वाले थे तथा अपने उपदेशों से उन्हें धैर्य, ढ़ाढ़स तथा न्याय पथ पर आरुढ़ रहने की शिक्षा दिया करते थे। महर्षि वेदव्यास का जीवन परिचय पढ़कर हम जान सकते है कि उनकी समाज में अहम भूमिका थी। उनके द्वारा दी गई शिक्षा आज भी लोगों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है।

वेदव्यास का दार्शनिक योगदानः हिन्दू धर्म गं्रथों के अनुसार महर्षि वेदव्यास त्रिकालज्ञ थे। जब पाण्डव एकचक्रा नगरी में निवास कर रहे थे, उस समय व्यासजी उनसे मिलने आये। उन्होने पाण्डवों को द्रोपदी के पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाकर कहा कि यह कन्या विधाता के द्वारा तुम ही लोगों के लिए बनाई गई है, अतः तुम लोगों को द्रोपदी स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए अब पांचाल नगरी जाना चाहिए। उधर महाराज द्रुपद को भी द्रोपदी के पूर्व जन्म की बात बता कर उन्हें द्रोपदी का पांचों पाण्डवों से विवाह करने की प्रेरणा दी थी। अपनी दिव्य दृष्टि से जान लिया था, कि कलयुग में धर्म क्षीण हो जायेगा। धर्म के नाश होने के कारण मनुष्य नास्तिक, कर्तव्यहीन तथा अल्पायु हो जायेगा। इसलिये व्यास जी ने वेदों का चार भागों में विभाजन कर दिया। जिससे की कम बुद्धि तथा कम स्मरण शक्ति रखने वाले भी वेदों का अध्ययन कर सके। व्यास जी ने वेदों का नाम रखा- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद। वेद में निहित ज्ञान के अत्यंत गूढ़ और सूक्ष्म होने के कारण वेदव्यास जी ने पांचवे वेद के रुप में पुराणों की रचना की जिनमें वेद के ज्ञान को रोचक कथाओं के रुप में बताया। कहा जाता कि वेदव्यास जी ने महाभारत गं्रथ और पुराणों को लिखने में प्रथम पुज्य गणेशजी से मदद मांगी थी, लेकिन भगवान गणेश ने लिखने से पहले एक शर्त रखी की वे तभी लिखेगें जब व्यासजी बिना रुके कहानी सुनायेगें। यह देख कर व्यासजी ने भी प्रतिशर्त रखी की गणेश उन्हें प्रतिलेखित करने से पूर्व छंदों को समझेगें। इस प्रकार व्यासजी ने सम्पूर्ण महाभारत, सभी उपनिषदों को और **18** पुराणों (भविष्य पुराण, ब्रहामाण्ड पुराण, मत्स्य पुराण, वामन पुराण, स्कंद पुराण, ब्रहम वैवत्र पुराण, नारद पुराण, शिव पुराण, पद्यमा पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, अग्नि पुराण, वराह पुराण, मार्कण्डेय पुराण, कूर्म पुराण, गरुड पुराण एवं लिंग पुराण) का वर्णन किया। ये पुराण शिक्षा को जन-जन तक सरल भाषा में पहुॅचाने का माध्यम बने।

उन्होने ज्ञान को लोक भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। जिससे यह केवल ब्राह्मणों तक सीमित न रह कर आम लोगों के लिए भी सुलभ हुआ।

महर्षि वेदव्यासजी का शैक्षिक दर्शनः ''वेदव्यासजी के अनुसार जिस मनुष्य की बुद्धि दुर्भावना से युक्त है और जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं रखा है, वह धर्म और अर्थ की बातों को सुनने की इच्छा होने पर भी उन्हें पूरी तरह समझ नहीं सकता।'' ''निरोगी रहना, ऋणी न होना, अच्छे लोगों से मेल रखना, अपनी वृत्ति से जीविका चलाना और निर्भय होकर रहना ये सब मनुष्य के सुख है''। ''शूरवीरता, विद्या, बल, दक्षता, धैर्य ये पांच मनुष्य के स्वभाविक मित्र है। ये गुण हर बुद्धिमान और महापुरुष में देखने को मिलते है''। वेदव्यासजी ने अपनी शिक्षा में कहा की ''सत्य ही धर्म, तप और योग

© 2024 Dr. Asha Sharma. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

है। सत्य ही सनातन ब्रह्म है। सत्य को ही परम यज्ञ कहा गया है तथा सब कुछ सत्य पर ही टिका हुआ है''। ''किसी का सहारा लिये बिना कोई ऊँचे नहीं चढ़ सकता, अतः सबको किसी प्रधान आश्रय का सहारा लेना चाहिए''। ''मन का दुःख मिट जाने पर शरीर का दुःख भी मिट जाता है''। किसी के प्रति मन में क्रोध रखने की अपेक्षा उसे तत्काल प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे- ''पल में जल जाना देर तक सुलगने से ज्यादा अच्छा है''। ''अमृत और मृत्यु दोनों इस शरीर में ही स्थित है। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत प्राप्त होता है''। ''जिसके मन में संशय भरा हुआ हैै, उसके लिए न यह लोक है, न परलोक है और न ही सुख है''। ''जिस मनुष्य की बुद्धि दुर्भावना से युक्त है, तथा जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में नहीं रखा है, वह धर्म और अर्थ की बातों को सुनने की इच्छा होने पर भी उन्हें पूर्ण रुप से समझ नहीं सकता''। ''क्षमा धर्म है, क्षमा वेद है, क्षमा यज्ञ है और क्षमा शास्त्र है। जो इसको जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है। मन में संतोष होना स्वर्ग की प्राप्ति से भी बढ़कर है, संतोष ही सबसे बड़ा सुख है। संतोष यदि मन में भली-भंाति प्रतिष्ठित हो जाये तो उससे बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है''। व्यासजी कहते है कि- ''दुःख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधी है- मन से दुःखों की चिन्ता न करना। जो केवल दया से प्रेरित हो कर सेवा करते है, उन्हें निश्चित सुख की प्राप्ति होती है। अधिक बलवान तो वे होते है, जिनके पास बुद्धिबल होता है, शारीरिक रुप से बलवान व्यक्ति वास्तविक बलवान नहीं होते है। जो मनुष्य विपत्ति पड़ने पर दुःखी नहीं होता, बल्कि सावधानी के साथ उद्योग का आश्रय लेता है तथा समय आने पर दुःख भी सह लेता है, उसके शत्रु सैदेव पराजित होते है। संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ जो मनुष्य की आशाओं का पेट भर सके। मनुष्य की आशा समुद्र के समान वह कभी नहीं भरती।

वेदव्यास जी का शैक्षिक दर्शन वैदिक परम्परा, आध्यात्मिक ज्ञान, नैतिक मूल्यों तथा जीवन के समग्र विकास पर आधारित है। उनका शैक्षिक दर्शन अत्यन्त गहन सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। वेदव्यास जी के शैक्षिक दर्शन के विभिन्न पक्ष निम्न लिखित है-

1. **ज्ञान का उद्देश्य, आत्मबोध और मोक्षः** वेदव्यास जी के अनुसार शिक्षा का परम उद्देश्य केवल सांसारिक ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि आत्मबोध (स्व-ज्ञान) और मोक्ष की प्राप्ति है। ज्ञान का उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और ब्रह्मज्ञान है। सच्चा विद्वान वही है- जो आत्मा और परमात्मा में भेद जानता है।
2. **शिक्षा के स्त्रोत वेद, उपनिषद, पुराणः** वेदव्यास जीे ने शिक्षा के प्रमुख स्त्रोंतों के रुप में वेदों को स्वीकार किया और उन्हे चार भागों में बांटा ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों का संकलन और संपादन किया। महाभारत और 18 पुराणों की रचना कर ज्ञान को लोकभाषा में उपलब्ध कराया।
3. **नैतिक और चारित्रिक शिक्षाः** वेदव्यास जी के शैक्षिक दर्शन में नैतिक और चरित्र निर्माण को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया। सत्य, अंहिसा, दया और संयम, क्षमा जैसे गुणों की शिक्षा अनिवार्य मानी। महाभारत में कक्षा और संवादों के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी गई। गीता में अर्जुन को कर्म, ज्ञान और भक्ति की शिक्षा दी गई जो आज भी प्रासंगिक है।
4. **गुरुकुल प्रणाली क समर्थनः** वेदव्यास जी ने गुरुकुल प्रणाली का समर्थन किया। गुरुकुल जहाॅ विद्यार्थी गुरु के सानिध्य में रहकर जीवनोपयोगी शिक्षा प्राप्त करते थे। आत्मनियन्त्रण, सेवा, अनुशासन और तप का अभ्यास होता था। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं, व्यवहारिक और आध्यात्मिक ज्ञान का समावेश थी।
5. **समावेशी और सार्वभौमिक शिक्षाः** उन्होने ज्ञान को जाति या वर्ग तक सीमित नहीं रखा। महाभारत जैसी रचनाओं को लोकभाषा में लिखकर समाज के सभी वर्गों को शिक्षित किया।
6. **शिक्षा और कर्म का समन्वयः** कर्मयोग का समर्थन करते हुए वेदव्यास जी ने कहा कि केवल ज्ञान प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, उसे जीवन में लागू करना भी आवश्यक है। गीता में कृष्ण के माध्यम से उन्होने कहा- ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन्'' अर्थात कर्म करते रहो, फल की चिंता मत करो- यही शैक्षिक संदेश है।
7. **समाज और धर्म के प्रति उत्तरदायित्वः** वेदव्यास जी ने शिक्षा को व्यक्तिगत उन्नति के साथ समाज की सेवा, धर्म की रक्षा और संस्कृति संवर्धन का भी एक साधन बताया।

निष्कर्ष

महर्षि वेदव्यास भारतीय शिक्षा प्रणाली के स्तंभो में से एक है। उन्होने धार्मिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्ञान को व्यवस्थित और जन सुलभ बनाया, जिससे भारतीय सभ्यता का बौधिक और सांस्कृतिक आधार मजबूत हुआ।

वेदव्यास जी के अनुसारः ''माता के रहते हुऐ मनुष्य को कभी चिन्ता नहीं होती, बुढ़ापा उसे अपनी ओर नहीं खींचता। जो अपनी माँ को पुकारता हुआ घर में प्रवेश करता है, वह निर्धन होते हुये भी मानों अन्नपुर्णा के पास चला आता है। मन का दुःख मिट जाने पर शरीर का दुःख मिट जाता है। सत्य से सूर्य तपता है, सत्य से आग जलती है, सत्य से वायु बहती है, सब कुछ सत्य में ही प्रतिष्ठित है। जैसे जल द्वारा अग्नि को शांत किया जाता है, वैसे ही ज्ञान के द्वारा मन को शांत किया जाता है। जैसे तेल समाप्त होने पर दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार कर्म के क्षीण हो जाने पर देव भी नष्ट हो जाते है। विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। स्वार्थ की अनुकुलता और प्रतिकुलता से ही मित्र और शत्रु बना करते है। मनुष्य जीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के उपकार को कभी न भूले। उसके उपकार से बढ़कर उसका उपकार कर दे। जो मनुष्य अपनी निंदा सह लेता है, उसने मानों सारे जगत पर विजय प्राप्त कर ली है। जहाँ कृष्ण है, वहाँ धर्म है और जहाँ धर्म है, वहाँ जय है''। इस प्रकार महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में गीता का उपदेश जो आज नैतिक शिक्षा, आत्म ज्ञान और जीवन प्रबन्ध का मूल स्त्रोत माना जाता है के द्वारा अपने दर्शन और दार्शनिक विचारों में मनुष्य को सत्य पथ पर चल कर निष्काम कर्म करने की प्रेरणा प्रदान की।

सन्दर्भ

1. https://www.hindisahityadarpan.in
2. https://hindi.webdunia.com
3. https://hihindi.com
4. https://www.aadinews.in
5. https://hi.wikipedia.org
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास (2001)-पùभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय (शारदा निकेतन, वाराणसी)
7. आचार्य, पं. षर्मा श्रीराम (1995) ''भारतीय संस्कृति के आधार भूत तत्व'' 'अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा प्रथम सस्करण, पृ.स. 3,136,3.138, 4.174
8. पाण्डेय, सत्यप्रकाष एवं षर्मा, रजनी (2007)''षिक्षा एवं भारतीय समाज''चोड़ा रास्ता जयपुर
9. पाण्डे, गोविन्द चन्द्र 'मूल्य मीमांसा' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, ए-26/2 विद्यालय मार्ग, तिलक नगर, जयपुर।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

© 2024 Dr. Asha Sharma. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/